Date 14/7/20

B.A. Part - II / Paper / IV

Lecture no - 41

Dr. Sunita Kumari
Assistant Professor
Marwari College Darbhanga

TOPIC उपकल्पना या परिकल्पना

वह चिन्तन जो अनुसंधान से पूर्व किया जाता है, परिकल्पना या उपकल्पना कहा जाता है। वैज्ञानिक पद्धति के विभिन्न चरणों में उपकल्पना का प्रथम स्थान आता है, यह मान्यता है कि उपकल्पना से ही अध्ययन शुरू होता है तथा उपकल्पना के साथ ही इसका समापन होता है।

परिभाषा

लुण्डबर्ग "एक उपकल्पना एक स्थानिक सामान्यीकरण या कामचलाऊ है, जिसके वैधता की जाँच होनी रहती है।"

गुडे तथा स्केट्स ने कहा है "उपकल्पना एक अनुमान है जिसे अन्तिम अथवा अस्थायी रूप से किसी अवलोकित तथ्य अथवा दशाओं की व्याख्या हेतु स्वीकार किया गया हो एवं अन्वेषण को आगे पथ प्रदर्शन प्राप्त होता है।"

उपर्युक्त परिभाषा के आधार पर कहा जा सकता है कि प्राकल्पना एक ऐसा सम्भावित प्रस्थापना या पूर्वानुमान है जिसे अनुसन्धानकर्ता अपने पूर्व ज्ञान और अनुभव के आधार पर निर्मित करते हैं तथा अनुसन्धान के दौरान उसकी वैधता की जाँच करते हैं इस प्रकार प्राकल्पना अनुसन्धानकर्ता का पथ प्रदर्शक बन जाता है तथा उसे इधर-उधर भटकने से रोकता है।

प्राकल्पना की विशेषताएँ

1. अनुमानात्मक कथन — प्राकल्पना एक अनुमानात्मक कथन है। अनुसंधान प्रारम्भ करने के पूर्व समस्या के संदर्भ में अनुसंधानकर्ता अपने ज्ञान व अनुभव के

आधार पर जो सामान्य अनुमान लगाता है उसे ही प्राक्कल्पना कहते हैं। अतः यह एक स्थापित कथन नहीं है यह एक कामचलाऊ कथन है जो स्थापित भी हो सकता है एवं असत्य भी।

2 परीक्षणीय :- अनुसंधानकर्ता अनुसंधान के दौरान प्राक्कल्पनाओं की वैधता की परीक्षा करता है जो सत्य या असत्य हो सकती है। अनुसंधान में इसी आधार पर तथ्यों का संकलन किया जाता है जो प्राक्कल्पना के परीक्षण में सहायक होती है। Ex- व्यक्ति को ख्वाजा-पीर में विश्वास रखना चाहिए एक आध्यात्मिक कथन है जिसका परीक्षण सम्भव नहीं है। अतः उसे प्राक्कल्पना नहीं कहा जा सकता। क्योंकि इसमें किसी प्रकार की आध्यात्मिकता नहीं होती।